भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 31
उत्तर देने की तारीख 29.01.2026

तमिल स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाओं की स्थापना

31. **श्री एस. कल्याणसुन्दरम :**

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) नई दिल्ली में स्थापित तमिल स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाओं की संख्या तथा उनके नाम पर आधिकारिक रूप से नामित सड़कों/मार्गों की संख्या और नामों की सूची तथा स्थापना/अधिसूचना की तिथियां क्या है;

(ख) क्या हाल ही में तमिलनाडु द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव, जिसमें राज भवन द्वारा पहचान किए गए आईएनए के हजारों नाम शामिल हैं, उक्त राष्ट्रीय स्मरणोत्सव के लिए विचार किए जाते हैं;

(ग) क्या तंजावुर के बृहदेश्वर मन्दिर के निर्माता राजाराज चोल की प्रतिमा को नई दिल्ली में स्थापित करने की योजना है; और

(घ) चोल वंश की कला, संस्कृति, इतिहास और विरासत, जिसमें अनुसंधान, संग्रहालय, महोत्सव, प्रकाशन और वैश्विक प्रदर्शनियाँ सम्मिलित हैं, के संरक्षण और संवर्धन के लिए कौन-कौन से कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): सड़कों का नामकरण करना संस्कृति मंत्रालय का अधिदेश नहीं है। संस्कृति मंत्रालय द्वारा ऐसे किसी भी रिकॉर्ड का रखरखाव नहीं किया जाता है।

(ख): वर्तमान में, ऐसा कोई स्मरणोत्सव लंबित नहीं है। संस्कृति मंत्रालय अपनी शताब्दी एवं वर्षगांठ स्कीम के अंतर्गत प्रसिद्ध हस्तियों की जन्मशतियों के साथ-साथ उनकी

और देश के ऐतिहासिक महत्व के घटनाक्रमों की 50वीं/75वीं/100वीं/125वीं/150वीं/175वीं आदि जैसी विशेष वर्षगांठ मनाता है।

(ग): जी, नहीं।

(घ): 1) संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एसजेडसीसी), तंजावुर ने 23 जुलाई से 29 जुलाई, 2025 तक तमिलनाडु के अरियालुर जिले के गंगईकोंडा चोलपुरम मंदिर में "राजा राजेंद्र चोल-प्रथम के दक्षिण-पूर्व एशिया में समुद्री यात्रा के 1000 वर्ष पूरे होने और गंगईकोंडा चोलपुरम मंदिर के निर्माण की शुरुआत होने का स्मरणोत्सव मनाया।

2) महान राजा राजराज चोल प्रथम ने अपने शासनकाल के दौरान तमिल शैव भजनों, 'देवारम' और 'तिरुवासगम' को पुन:प्रचलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसके कारण उन्हें 'थिरुमुराई कंडा चोलन' की उपाधि दी गई थी। इसी उद्देश्य से दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, तंजावुर द्वारा तमिलनाडु के विभिन्न शैव मंदिरों जैसे कि तिरुवन्नामलई, तिरुचिरापल्ली, तंजावुर, तिरुवारुर और वाराणसी में आयोजित काशी तमिल संगमम 3.0 में ओथुवरों (पारंपरिक गायकों) द्वारा देवारम और तिरुवासगम की कार्यशालाएं और गायन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अप्रैल 2023 से अब तक, करन्थानी तमिल संगमम, तंजावुर में 150 छात्रों के साथ देवारम और तिरुवासगम की साप्ताहिक प्रशिक्षण कक्षाएं भी निरंतर चलाई जा रही हैं।

3) संस्कृति मंत्रालय का दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (एसजेडसीसी), तंजावुर प्रत्येक वर्ष तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर में सत्यविझा (महान चोल सम्राट राजाराज चोल प्रथम की जयंती), नवरात्रि विझा और मंदिर रथ उत्सवों के दौरान पुराने पारंपरिक तमिल कला रूपों जैसे भरतनाट्यम, थप्पाट्टम, करगाट्टम और कावड़ियाट्टम के जुलूस और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है।

*****